रविवार 7 नवम्बर 2010

सांस्कृतिक डायरी

नवभारत

• राजेश गनोदवाले

प्रसंग राज्योत्सव के

स्थानीयता को अवसर

इस दफा राज्योत्सव में स्थानीयता की खासी पूछ-परख देखी गई. लोक कलाकारों से लेकर सिनेमा और इतर आयोजनों में स्थानीय दबदबा दिखा. विवाद के सुर भी गूंजे, मसलन थीम सांग का मसला. उधर, सलमान खान से प्रारंभ उत्सव के समापन में प्रीतम ने समापन का सुर लगाया. वैसे सांस्कृतिक आयोजनों का लुत्फ लेने के नाम पर रोजाना हजारों लोग जुड़ते गए. इधर, विभिन्न विभागों की प्रदर्शनियों का भी जलवा खूब जमा. असल में राज्योत्सव में स्थानीयता के इसी असर का सम्मान प्रदेश सरकार करती है.

साल में एक ही मौका उसके समक्ष आता है. जब वह अपने विभिन्न विभागों के माध्यम से जनता को यह बताने की सफल कोशिश करती है कि उसके सपने क्या हैं और इन सपनों को पूरा करने में वह किस हद तक कामयाब हुई. स्थानीयता की बात करें तो प्रदेश के सभी जिलों में भी लोक मंडलियां सुगम गायक, नर्तक और शास्त्रीय फनकारों ने भी राज्योत्सव के मंच से अपनी-अपनी कला जोश - खरोस के साथ पेश की.

मानस का सम्मान

CG-04 में डॉ. रविशंकर व्यास मानसगान करने वाले इकलौते प्रतिनिधि कलाकार हैं जिनका इस क्षेत्र का सुदीर्घ अनुभव है. पिछले 40 सालों से अध्यात्मिक गायन में लगे डॉ. व्यास प्रदेश में इस हेतु खासतौर से सुपरिचित हैं. उनकी इस लंबी मानस यात्रा का सम्मान राज्योत्सव में चक्रधर सम्मान से सम्मानित कर किया गया.

एक दशक बाद ली गई सुध

राज्योत्सव में जहां ऐसे कलाकारों को जिन्हें बारहमासी अवसर मिलते हैं वहीं एक कलाकार ऐसा भी निकला जिसकी सुध 'दस बरस' में पहली दफा संस्कृति विभाग ने ली. यह हैरतअंगेज सच अश्विनी कुमार वर्मा के नाम दर्ज हुआ. दो सौ वर्ष पुरानी गजल गायकी को करीने से जिंदा रखे हुए अश्विनी वर्मा आकाशवाणी-दूरदर्शन के ए-ग्रेड गजल गायक हैं. गायकी में रिवायती गमक की छौंक लिये चलने वाले इस गजल गायक को सुनने पर पुरानी सुगंध मन में समाने लगती है. राज्योत्सव के दस प्रकाश वर्ष में दीपावली के ठीक पहले आया यह अवसर निःसंदेह अश्विनी वर्मा के लिए सही मायनों में प्रकाश उत्सव साबित हुआ, इतना तो कहा ही जा सकता है.

खड़े साज का दम

मानदास टण्डन 92 वर्ष के हैं, और होशो-हवाश में. अभी भी दमखम से भरे. 'खड़ा साज', अर्थात खड़े होकर नाचा-गम्मत करने वाला यह 'बूढ़ा-नौजवान' इस दफा राज्योत्सव में अपनी आजीवन निष्ठा को देखते 'दाऊ मंदराजी सम्मान' से नवाजा गया.

सिने खटास

छत्तीसगढ़ी सिनेमा बिरादरी अभी ठीक से खड़ी भी नहीं हुई और उसके आपसी अहम टकराने लगे. राज्योत्सव में एक दिन साझा रूप से छत्तीसगढ़ी फिल्म स्टार नाइट में पैसे और अहम का विवाद इतना उलझा कि एक धड़ा जिसमें अस्सी फीसदी कलाकार थे उन्होंने दूसरे धड़े पर आरोप जड़ते खुद को किनारे कर दिया. इही ल कहिथे ददा- 'सबले बढ़िया छत्तीसगढ़िया!'